किसान की उन्नति से खुशहाली

समारोह राष्ट्रीय सरसों अनुसंधान निदेशालय का 19वां स्थापना दिवस मनाया

भास्कर न्यूज | भरतपुर

रविवार को सेवर स्थित राष्ट्रीय सरसों अनुसंधान निदेशालय के 19 वें स्थापना दिवस समारोह में मुख्य अतिथि भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान नई दिल्ली के निदेशक डॉ. एच. एस. गुप्ता ने वैज्ञानिकों एवं किसानों को संबोधित करते हुए कहा कि जलवायु परिवर्तन के अनुरूप ही आज अनुसंधान करने की आवश्यकता है। परिस्थितियों के अनुसार वैज्ञानिक किसानों को सलाह दें कि खेती में बदलाव कैसे किया जाए ताकि उत्पादन बढ़ाया जा सके। उन्होंने कहा कि किसानों की जब उन्नति होगी तभी भारत में खुशहाली होगी।

इस अवसर पर समारोह के अध्यक्ष भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के सहायक महानिदेशक डॉ. बी. बी. सिंह ने कहा कि राई सरसों फसल का भारतीय आर्थिक व्यवस्था में एक विशेष स्थान है। निदेशक डॉ. जितेंद्र सिंह चौहान ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि भरतपुर में राष्ट्रीय सरसों अनुसंधान निदेशालय की स्थापना का मिशन राई सरसों की उत्पादकता बढ़ाना, तेल की गुणवत्ता और किसानों की आजीविका में सुधार करने के साथ ही विभिन्न हित कारकों को ज्ञान आधारित संसाधन प्रबंधन प्रौद्योगिकी प्रदान करना है। इस अवसर पर केंद्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान मथुरा के निदेशक डॉ. देवेंद्र स्वरुप ने दोनों संस्थानों में आपसी सामंजस्य से अनुसंधान की आवश्यकता पर बल दिया। कृषि विज्ञान केन्द्र कुम्हेर के प्रभारी डॉ. अमर सिंह एवं कृषि अनुसंधान उपकेंद्र के प्रभारी डॉ. उदयभान सिंह ने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर सरसों अनुसंधान निदेशालय के दो प्रकाशनों 'सिद्धार्थः सरसों संदेश' एवं 'सरसों न्यूज' का भी अतिथियों द्वारा विमोचन किया गया।

इस अवसर पर सरसों अनुसंधान निदेशालय द्वारा वर्ष 2011-12 में आकाशवाणी के जयपुर, कोटा, मथुरा एवं आगरा केंद्रों से प्रसारित रेडियो कृषि शिक्षा कार्यक्रम के प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम के विजेता किसानों को पुरस्कार प्रदान करके सम्मानित किया गया, जिसमें मथुरा के चंद्रशेखर सारस्वत, आगरा के मानवेंद्र सिंह एवं कोटा के नरेंद्र जांगीड़ा को दस हजार, पांच हजार एवं तीन हजार नकद राशि के साथ प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र प्रदान किया गया। इसके साथ ही मथुरा के गोपाल प्रसाद बघेल, कन्हैया सिंह चौहान, दीपक कुमार, बारां की सुनीता योगी, नागौर के रामनिवास फड़ोलिया एवं मंजू और सुनीता को सांत्वना पुरस्कार के रूप में एक हजार नकद राशि एवं प्रमाण पत्र प्रदान किया गया। निदेशालय के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. के. एच. सिंह को उत्कृष्ट वैज्ञानिक का पुरस्कार प्रदान किया गया। मीठा लाल एवं बच्चू सिंह को उत्कृष्ट तकनीकी अधिकारी, रामसहाय मीणा को उत्कृष्ट प्रशासनिक कर्मचारी तथा लालाराम को उत्कृष्ट कुशल सहायक का पुरस्कार प्रदान किया गया। इसके साथ ही अतिथियों को प्रतीक चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया। कार्यक्रम का संचालन वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अशोक कुमार शर्मा एवं धन्यवाद प्रस्ताव प्रधान वैज्ञानिक डॉ. यशपाल सिंह ने किया।

भरतपुर. निदेशालय के प्रकाशनों का विमोचन करते अतिथि।

दैनिक भास्कर 22 अक्टूबर 2012

किसानों की उन्नति से ही देश की खुशहाली: डॉ. गुप्ता

सरसों अनुसंधान निदेशालय के स्थापना दिवस पर अतिथि अनुसंधान के दो प्रकाशनों का विमोचन करते एवं पुरस्कार वितरित करते हुए। फोटोः नवज्योति

भरतपुर, 21 अक्टूबर। भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, के निदेशक डॉ. एच. एस. गुप्ता ने कहा कि जलवायु परिवर्तन के अनुरूप ही आज अनुसंधान करने की आवश्यकता है। परिस्थितियों के अनुसार वैज्ञानिक किसानों को सलाह दें कि खेती में बदलाव कैसे किया जाए ताकि उत्पादन बढ़ाया जा सके। वैज्ञानिकों और किसानों को मिलकर काम करना चाहिए। खेती में व्यवसायीकरण एवं आत्म निर्भर होना जरूरी है वह रविवार को सरसों अनुसंधान निदेशालय, के 19 वें स्थापना दिवस समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में वैज्ञानिकों, अधिकारियों और किसानों को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि किसानों को अपनी फसल का उचित मूल्य नहीं मिलता। एक अनुमान के अनुसार देश में पर्याप्त भण्डारण व्यवस्था एवं प्रसंस्करण की सुविधाएं नहीं होने के कारण प्रति वर्ष सत्तर हजार करोडं का, दलहन, फल, सब्जियां आदि खराब हो

स्थापना दिवस समारोह

जाती है। समारोह के अध्यक्ष भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, के सहायक महानिदेशक (दलहन एवं तिलहन) डॉ. बी. बी. सिंह ने कहा कि राई-सरसों फसल का भारतीय आर्थिक व्यवस्था में एक विशेष स्थान है। इसकी स्थापना के बाद इस केन्द्र द्वारा किए गए अनुसंधान कार्यों एवं प्रगति पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि किस्मों एवं तकनीकों के विकास के साथ-साथ इस निदेशालय ने उनका प्रसार एवं उन्हें किसानों तक पहुँचाने के लिए भी उल्लेखनीय कार्य किया है। वहीं सरसों अनुसंधान निदेशालय के निदेशक डॉ. जितेन्द्र सिंह चौहान ने अतिथियों का स्वागत करते हुए अपने सम्बोधन में कहा कि सरसों अनुसंधान निदेशालय, भरतपुर की स्थापना का मिशन राई-सरसों की उत्पादकता बढ़ाना, तेल की गुणवत्ता और किसानों की आजीविका में सुधार करना साथ ही, विभिन्न हितकारकों को ज्ञान आधारित संसाधन प्रबंधन प्रौद्योगिकी प्रदान करना है। इस अवसर पर सरसों अनुसंधान निदेशालय के दो प्रकाशनों का भी अतिथियों द्वारा विमोचन किया गया। कार्यक्रम के दौरान सरसों अनुसंधान निदेशालय द्वारा वर्ष 2011-12 में आकाशवाणी के जयपुर, कोटा, मथुरा एवं आगरा केन्द्रो से प्रसारित रेडियों कृषि शिक्षा कार्यक्रम के प्रशनोत्तरी कार्यक्रम के विजेता किसानों को पुरस्कार प्रदान करके सम्मानित किया गया।

दैनिक नवज्योति 22 अक्टूबर 2012

'वैज्ञानिक व किसान करें सामूहिक प्रयास'

सरसों अनुसंधान निदेशालय का स्थापना दिवस

भरतपुर. वैज्ञानिक किसानों को सलाह दें कि खेती में बदलाव कैसे किया जाए, ताकि उत्पादन बढ़ाया जाए। वैज्ञानिक और किसानों को मिलकर काम करना चाहिए। यह बात भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान दिल्ली के निदेशक डॉ. एचएस गुप्ता ने सरसों अनुसंधान निदेशालय के 19वें स्थापना दिवस समारोह को सम्बोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि किसानों को अपनी फसल का उचित मूल्य नहीं मिलता है। देश में पर्याप्त भंडारण व्यवस्था नहीं होने से प्रति वर्ष सत्तर हजार करोड़ का खाद्यान्न खराब हो जाता है। इस नुकसान को रोकने के लिए सरकार को योजना बनानी चाहिए। सहायक निदेशक डॉ. बीबी सिंह ने कहा कि

सरसों अनुसंधान निदेशालय में किसान को सम्मानित करते अतिथि।

राई-सरसों फसल का भारतीय आर्थिक व्यवस्था में विशेष स्थान है। निदेशालय के निदेशक डॉ. जितेन्द्र सिंह चौहान ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि निदेशालय की स्थापना का मिशन राई-सरसों की उत्पादका बढ़ाना, तेल की गुणवत्ता और किसानों की आजीविका में सुधारन करने के साथ ही विभिन्न हितकारकों को ज्ञान आधारित संसाधन प्रबंधन प्रौद्योगिकी प्रदान करना है। केन्द्रीय बकरी अनुसंधान मथुरा के निदेशक देवेन्द्र स्वरूप ने सामंजस्य से अनुसंधान की आवश्यकता पर जोर दिया। कृषि विज्ञान केन्द्र कुम्हेर के प्रभारी डॉ. अमरसिंह एवं कृषि अनुसंधान उपकेन्द्र के प्रभारी डॉ. उदयभान ने भी विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर आकाशवाणी के जयपुर, कोटा, मथुरा एवं आगरा केन्द्रों से प्रसारित प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम के विजेता किसानों को पुरस्कृत किया। संचालन डॉ. अशोक कुमार शर्मा ने किया। डॉ. यशपाल सिंह ने आभार जताया।

गोवंश की अवैध निकासी पर रोष

राजस्थान पत्रिका 22 अक्टूबर 2012

अनुसंधान जलवायु परिवर्तन के अनुरूप जरूरी : गुप्ता

भरतपुर 21 अक्टूबर (निस)। भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान नई दिल्ली के निदेशक डॉ.एचएस गुप्ता ने कहा कि जलवायु परिवर्तन के अनुरूप ही आज अनुसंधान करने की आवश्यकता है।

परिस्थितियों के अनुसार वैज्ञानिक किसानों को सलाह दें कि खेती में बदलाव कैसे किया जाये ताकि उत्पादन बढ़ाया जा सके। डॉ.एचएस गुप्ता सरसों अनुसंधान निदेशालय भरतपुर के 19वें स्थापना दिवस समारोह को मुख्य अतिथि के रूप में संबोधित कर रहे थे। डॉ. गुप्ता ने कहा कि किसानों को अपनी फसल का उचित मूल्य नहीं मिलता। उन्होंने कहा कि एक अनुमान के अनुसार देश में पर्याप्त भण्डारण व्यवस्था एवं प्रसंस्करण की सुविधाएं नहीं होने से प्रतिवर्ष 70 हजार करोड़ का खाद्यान्न, दलहन, फल, सब्जियां खराब हो जाती हैं। इस नुकसान को रोकने के लिए सरकार को योजना बनाकर किसानों को सहारा देना चाहिये ताकि खेती के प्रति उनमें निराशा न हो।

- सरसों अनुसंधान निदेशालय का स्थापना दिवस
- हर वर्ष होती हैं 70 हजार करोड़ के खाद्यान्न, दलहन, फल व सब्जियां खराब

उन्होंने किसानों से कहा कि खेती के टिकाऊपन के लिए उन्हें पशुपालन को भी अपनाना चाहिये।

इस दौरान समारोह अध्यक्ष भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली सहायक महानिदेशक डॉ बीबी सिंह ने कहा कि राई-सरसों फसल का भारतीय आर्थिक व्यवस्था में एक विशेष स्थान है। इस मौके पर सरसों अनुसंधान निदेशालय के निदेशक डॉ जितेन्द्र सिंह चौहान ने अतिथियों का स्वागत किया। इस मौके पर केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान मथुरा के निदेशक डॉ देवेन्द्र स्वरूप ने अपने विचार व्यक्त करते हुये दोनों संस्थानों में आपसी सामंजस्य से अनुसंधान की आवश्यकता पर बल दिया।

सरसों अनुसंधान निदेशालय भरतपुर के स्थापना दिवस पर किसान को सम्मानित किया गया।

राष्ट्रदूत 22 अक्टूबर 2012

देश में परिस्थिति अनुकूल हों कृषि अनुसंधान

सरसों अनुसंधान निदेशालय के 19वें स्थापना दिवस पर हुआ संगोष्ठी का आयोजन

वार्षिकोत्सव समारोह में पुस्तक का विमोचन करते पूसा के निदेशक एचएस गुप्ता, एडीजी डा. बीबी सिंह, जेएस चौहान आदि।

कल्पतरु समाचार सेवा

भरतपुर। खेती को लाभकारी बनाने के लिए जरूरी है कि वैज्ञानिक किसानों की परिस्थितियों को ध्यान में रखकर अनुसंधान करें। जलवायु परिवर्तन का भी ध्यान रखना आवश्यक है।

ये विचार भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान पूसा के निदेशक डॉ. एच. एस. गुप्ता ने राष्ट्रीय सरसों अनुसंधान निदेशालय भरतपुर के वार्षिकोत्सव में व्यक्त किए। उन्होंने वैज्ञानिकों से कहा कि खेती में व्यावसायीकरण को बढ़ावा देना जरूरी है। उन्होंने कहा कि देश में पर्याप्त भण्डारण व्यवस्था एवं प्रसंस्करण की सुविधाएं नहीं होने के कारण प्रति वर्ष 70 हजार करोड़ का खाद्यान्न, दलहन, फल, सब्जियां आदि खराब हो जाती हैं।

इस नुकसान को रोकने के लिये सरकार को योजना बनाकर किसानों को सहारा देना चाहिये ताकि खेती के प्रति उनमें निराशा न हो। उन्होंने कहा कि जब तक विकसित तकनीकें किसानों तक नहीं पहुंचती तब तक वैज्ञानिकों का कार्य पूरा नहीं होता, इसलिए उन्नत तकनीक किसानों तक पहुंचाए जिससे उनकी आय में बढ़ोत्तरी हो सके।

इस अवसर पर समारोह के अध्यक्ष भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के सहायक महानिदेशक (दलहन एवं तिलहन) डॉ. बीबी सिंह ने कहा कि राई-सरसों फसल का भारतीय आर्थिक व्यवस्था में एक विशेष स्थान है। इस केन्द्र द्वारा किये गये अनुसंधान से किसानों को लाभ हुआ है। संस्थान के निदेशक डॉ. जितेन्द्र सिंह चौहान ने अतिथियों का स्वागत करते हुए अपने सम्बोधन में कहा कि उत्पादकता, गुणवत्ता सुधारने के साथ किसानों की आजीविका में सुधार उनका ध्येय है। इस अवसर पर केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. देवेन्द्र स्वरूप ने दोनों संस्थानों में आपसी सामन्जस्य से अनुसंधान की आवश्यकता पर बल दिया। इस अवसर पर कृषि विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर के प्रभारी डॉ. अमर सिंह एवं कृषि अनुसंधान उप केन्द्र के प्रभारी डॉ.उदयभान ने भी अपने विचार व्यक्त किए। इस दौरान रेडियो कृषि शिक्षा कार्यक्रम के प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम के विजेता किसानों को पुरस्कार प्रदान करके सम्मानित किया गया। इनमें मथुरा के चन्द्रशेखर सारस्वत, आगरा के मानवेन्द्र सिंह एवं कोटा के नरेन्द्र जांगीड़ को क्रमशः दस हजार, पांच हजार एवं तीन हजार नकद धनराशि के साथ प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र प्रदान किया गया। कई लोगों को सांत्वना पुरस्कार दिए गए।

निदेशालय के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. केएच सिंह को उत्कृष्ट वैज्ञानिक का पुरस्कार प्रदान किया गया। मीठा लाल एवं बच्चू सिंह को उत्कृष्ट तकनीकी अधिकारी, रामसहाय मीणा को उत्कृष्ट प्रशासनिक कर्मचारी तथा लालाराम को उत्कृष्ट कुशल सहायक का पुरस्कार प्रदान किया गया। निदेशालय के स्थापना दिवस के अवसर पर अतिथियों को प्रतीक चिह्न भेंट कर सम्मानित किया। संचालन वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अशोक कुमार शर्मा एवं धन्यवाद प्रस्ताव प्रधान वैज्ञानिक डॉ. यशपाल सिंह ने किया।

कल्पतरु एक्सप्रेस 22 अक्टूबर 2012